eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 08, August 2026 DOI: 10.82471/ds2wz-gnj04

'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' में स्त्री–जीवन का यथार्थः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अल्ताब आलम[1]
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिन्दकी फतेहपुर उ0प्र0

Received: 21 August 2026 Accepted & Reviewed: 25 August 2026, Published: 31 August 2026

Abstract

इस शोध पत्र में अब्दुल बिस्मिल्लाह के प्रसिद्ध उपन्यास 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' में चित्रित बनारस के बुनकर समाज की स्त्रियों के जीवन–यथार्थ का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें बनारस के बुनकर परिवेश की सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक जटिलताओं के बीच स्त्री के जीवन–संघर्ष, श्रम, अस्तित्व, अस्मिता एवं पहचान के संकट के प्रश्न को पूरी संजीदगी से उठाया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उपन्यास में चित्रित स्त्री पात्रों की सामाजिक,आर्थिक एवं धार्मिक स्थितियों,उनके श्रम, संघर्ष, अस्मिता बोध तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रभाव का आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास की स्त्रियाँ दोहरे संघर्ष का सामना करती हैं। एक ओर वे आर्थिक अभाव, गरीबी और सामाजिक शोषण से जूझती हैं, वहीं दूसरी ओर पितृसत्तात्मक व्यवस्था और पारिवारिक बंधनों का भी सामना करती हैं। तथापि वे अपने परिवार की आर्थिक व्यवस्था के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उपन्यास की स्त्रियाँ केवल पीड़ित नहीं हैं, बल्कि उनमें आत्म–चेतना, आत्मसम्मान और परिवर्तन की आकांक्षा भी मौजूद है।वे अपने अस्तित्व,अस्मिता एवं पहचान के प्रति जागरूक दिखाई देती हैं।

प्रमुख शब्दः स्त्री जीवन, यथार्थवाद, बुनकर समाज, आत्मचेतना, अस्तित्व, स्त्री–विमर्श, अस्मिता, श्रम, पितृसत्तात्मक व्यवस्था

Introduction

स्त्री और पुरुष दो भिन्न संरचना होने के बावजूद एक–दूसरे के पूरक हैं। मानव समाज की निर्मिति में स्त्री और पुरुष दोनों बराबर सहभागी हैं तथापि अतीत में स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में कम सामाजिक अधिकार,अवसर और सम्मान प्राप्त होता रहा है। पुरुषों ने तो समाज में अपनी स्थिति को प्राथमिकता के स्तर पर ले जाना सुनिश्चित कर लिया किन्तु स्त्रियों के जीवन में अपेक्षित सुधार व परिवर्तन वर्तमान समय तक दिखाई नहीं पड़ता। खासकर श्रमिक वर्ग की स्त्रियाँ आर्थिक विपन्नता, सामाजिक विषमता तथा पितृसत्तात्मक संरचना के कारण दोहरे शोषण का अनुभव करती हैं। 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' में बनारस के बुनकर समाज की स्त्रियों के जीवन–यथार्थ को सामाजिक–आर्थिक विषमताओं और संघर्षों के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया गया है। उपन्यास में बुनकरों के आर्थिक दैन्य, श्रम संस्कृति,सामाजिक विसंगतियाँ तथा मानसिक संघर्ष का जीवंत चित्रण किया गया है। बुनकरों के जीवन का यथार्थ चित्रण करते समय अब्दुल बिस्मिल्लाह जी बुनकर स्त्रियों की दशा को नजरअंदाज नहीं करते। भारतीय पारिवारिक संरचना में स्त्री की भूमिका सदैव अहम रही है। परिवार में यदि गरीबी, जहालत और भूख की पीड़ा है तो सर्वप्रथम उसका प्रभाव स्त्री और बच्चों पर ही पड़ता है। आलोच्य उपन्यास में बुनकर समाज की स्त्रियाँ इसी जटिल सामाजिक यथार्थ का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे आर्थिक अभाव, बीमारी की पीड़ा तो झेलती ही हैं, सामाजिक,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 08, August 2026 DOI: 10.82471/ds2wz-gnj04

पारिवारिक और धार्मिक बंधनों के बीच अपने वजूद को ढूँढने का प्रयास भी करती हैं।लेखक ने इस संदर्भ में अपनी सूक्ष्म दृष्टि से बुनकर स्त्रियों के जीवन को गहन संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है।

स्त्री और पुरुष के बीच कार्यों का बंटवारा परंपरागत या सामाजिक आधार पर किया गया है।इसमें प्रायः पुरुषों को आय अर्जित करने और बाहरी आर्थिक कार्यों से तथा स्त्रियों को घर परिवार बच्चों की देखभाल और घरेलू कार्यों से जोड़ा गया है। लैंगिक आधार पर"श्रम विभाजन में भेदभाव के पीछे मंशा यह थी कि स्त्रियों को आर्थिक रूप से पुरुषों पर आश्रित रखा जाए। स्त्रियों के शोषण का दूसरा कारण थी वह सामाजिक बनावट जो स्त्रियों को पुरुषो से हेय प्रमाणित करने के लिए औचित्यपूर्ण सिद्धांत गढ़ लेती थी जिसके तहत कहा जाता था कि स्त्रियों एवं पुरुषों की दैहिक रचना इस प्रकार है कि स्त्रियाँ प्राकृतिक रूप से कमजोर हैं।"[1]

प्रायः देखने में आता है कि श्रमिक वर्ग की स्त्रियाँ परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन करती हैं। वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर पारिवारिक समस्याओं के निस्तारण में सहयोग देती हैं। इस उपन्यास में भी बुनकर समाज की स्त्रियाँ केवल घरेलू काम तक सीमित नहीं हैं, अपितु परिवार की आर्थिक गतिविधियों यथा,धागा तैयार करना, बुनाई में सहयोग देना तथा बच्चों के लालन–पालन में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।यह स्थिति पितृसत्तात्मक समाज की विषमता को उजागर करती है।

उपन्यास की स्त्रियाँ विपरीत परिस्थितियों की शिकार तो हैं, किंतु वे समाज और धार्मिक बंधनों के इतर अपनी पहचान के लिए भी सजग हैं। यथा–कदा वे सामाजिक पारिवारिक और धार्मिक मान्यताओं के विपरीत जाने से नहीं हिचकती हैं। यद्यपि मुस्लिम समाज की स्त्रियों के श्रम को भी अन्य समाज की स्त्रियों के कार्यों की भाँति कम महत्व दिया जाता है। उनके पारिश्रमिक पुरुष कामगार के पारिश्रमिक से कम होते हैं। स्त्रियों का श्रम भी परिवार की जीविका का आधार है, ऐसा मानने में पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना अपने को सहज महसूस नहीं करती। जिससे स्त्रियों के योगदान को अपेक्षित सामाजिक मान्यता नहीं मिलती। यह स्थिति समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता और श्रम के अवमूल्यन को दर्शाती है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह ने उपन्यास में स्त्री जीवन के विविध पक्षों–उनके संघर्ष, पीड़ा, त्याग, आत्मसम्मान, अस्मिता बोध आदि को बहुत ही सूक्ष्मता और संवेदनशीलता से चित्रित किया है। उपन्यास में चित्रित मुस्लिम स्त्री के जीवन यथार्थ से स्त्रियों की आत्म–चेतना, अस्मिता और अस्मिता बोध, मानवीय मूल्य, स्वावलंबन आदि प्रश्न जाने–अनजाने उभरकर सामने आते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत शोध का उद्देश्य 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' में स्त्री जीवन के यथार्थ का समग्र चित्रण करना है। इसके अंतर्गत बुनकर समाज की स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक और धार्मिक प्रस्थिति तथा उनके श्रम, संघर्ष और अस्तित्वबोध तथा स्त्री–चेतना के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करने का प्रयास किया जाएगा। यह अध्ययन मुस्लिम समाज के परिप्रेक्ष्य में स्त्रियों की स्थिति को समझने में तथा उनमें अपेक्षित परिवर्तन में सहायक सिद्ध होगा।

मुख्य उद्देश्य :– इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' में चित्रित स्त्री जीवन के बहुआयामी यथार्थ का चित्रण करना है। बुनकर स्त्री समाज की वास्तविक जीवन स्थिति का प्रामाणिक अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य है, ताकि बुनकर समाज की स्त्रियों की सामाजिक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 08, August 2026 DOI: 10.82471/ds2wz-gnj04

स्थिति, आर्थिक योगदान, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, संघर्ष और अस्मिता के प्रश्नों का एक प्रामाणिक और वास्तविक धरातल निर्मित करने में सहायता प्राप्त हो सके।

शोध पद्धति – यह शोध गुणात्मक शोध पद्धति तथा पाठ–विश्लेषण पद्धति के आधार पर सम्पन्न किया गया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' बुनकर समाज की स्त्रियों के जीवन का यथार्थपूर्ण दस्तावेज है, जो उनके संघर्ष, श्रम, सामाजिक स्थिति और आत्मसम्मान को प्रभावशाली ढंग से उजागर करता है।

साहित्यावलोकन – साहित्य में यथार्थ चित्रण की महत्वपूर्ण परंपरा रही है। इसी परंपरा के अनुपालन में अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' का भी विशेष महत्व है। इस उपन्यास पर चर्चा करते हुए अधिकांश आलोचकों ने बुनकर समाज की गरीबी, आर्थिक शोषण, सांप्रदायिक परिवेश, वर्ग–संघर्ष आदि के विषय में अपने विचार व्यक्त किए हैं। बुनकर समाज की स्त्रियों की दशा और दिशा उनके आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालना अपेक्षित है। स्त्री के श्रम, उसकी पारिवारिक भूमिका, मानसिक संघर्ष, उसकी सामाजिक और धार्मिक स्थिति और आत्मचेतना का समग्र अध्ययन इस शोध हेतु पर्याप्त संभावना रखता है। प्रस्तुत शोध पत्र में आलोच्य उपन्यास में चित्रित स्त्री जीवन के यथार्थ का स्त्री विमर्श और स्त्री अस्मिता के संदर्भ में विश्लेषण किया जाएगा।

स्त्री–विमर्श से संबंधित विचारकों–प्रभा खेतान, मैनेजर पांडेय, राजेन्द्र यादव तथा अन्य आलोचकों ने स्त्री की सामाजिक स्थिति, लैंगिक असमानता तथा पितृसत्तात्मक संरचना पर महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए हैं। इन वैचारिक आधारों के आलोक में प्रस्तुत शोध 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' में चित्रित स्त्री जीवन का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन बुनकर समाज की स्त्रियों के श्रम, संघर्ष, सामाजिक स्थिति, अस्मिता तथा आत्मचेतना को केंद्र में रखकर उपन्यास की नई व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

विश्लेषण– उपन्यास की शुरुआती पंक्तियाँ स्त्री जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करती नजर आती हैं। अलीमुन और कमरून दोनों स्त्री पात्र पारिवारिक और आर्थिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करती हुई सामाजिक संबंधों को निभा रही हैं। प्रायः कामगार वर्ग आपस में एक–दूसरे का हाल–चाल पूछकर अपनी पीड़ा और दर्द को छिपाने का प्रयास करते हैं। अलीमुन और कमरून की वार्तालाप में स्त्री जीवन का सत्य दिखाई पड़ता है–

"जाड़े की धूप इस छत से उस छत तक पीले कतान की तरह फैली हुई है। इस छत पर अलीमुन एक ओर बने हुए बावर्चीखाने में आग सुलगा रही है और उस छत पर कमरुन कतान फेरने की तैयारी में व्यस्त है।अचानक दोनों छतें बोल उठती हैं, का हो अलीमुन अभइन तक आग नाहिंन बारेव का?"[2] यह संवाद स्पष्ट करता है कि बुनकर स्त्रियों का जीवन श्रम, अभाव और परस्पर सहयोग पर आधारित है।

मुस्लिम समाज में परदा एक सामाजिक और धार्मिक परंपरा है, जिसका सीधा संबंध शालीनता और निजता से है। यह मुस्लिम मर्द और औरत दोनों के आचरण पर लागू होता है। कालांतर में यही पर्दा स्त्रियों की स्वतंत्रता और उनकी सामाजिक उन्नति में बाधक बनता है। उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र अलीमुन को टी.बी. जैसी संक्रामक बीमारी है।उसका टी.बी. से पीड़ित होना केवल व्यक्तिगत बीमारी नहीं,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 08, August 2026 DOI: 10.82471/ds2wz-gnj04

बल्कि निर्धनता, कुपोषण और श्रम–शोषण का प्रतीक है। चिकित्सकीय सुविधा, पौष्टिक भोजन तथा विश्राम के अभाव में वह निरंतर कार्य करती रहती है। लेखक इस प्रसंग के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि निर्धन परिवारों में स्त्री की बीमारी भी परिवार की आर्थिक विवशताओं के सामने गौण हो जाती है।इसके लिए उसे उचित दवा, आराम और स्वस्थ आबोहवा की आवश्यकता है, किंतु आर्थिक दरिद्रता होने के कारण बुनाई के काम में खटना पड़ता है और उचित दवा और पोषण की कमी उसकी बीमारी को बढ़ाती जाती है। खुले वातावरण में उसे कुछ आराम मिलता है, किंतु सामाजिक और धार्मिक नियम उसे घर के बाहर खुली हवा में जाने से रोकते हैं–" अलीमुन को टी.बी.हो गई है।मतीन को मालूम है।लेकिन वह कुछ नहीं कर सकता। घर का जो काम है,वह बीवी को करना ही होगा। फेराई–भराई, नरी– ढोटा, हांडी –चूली सभी कुछ करना होगा। बिन किए काम चलेगा नहीं। और रहना भी होगा पर्दे में। खुली हवा में घूमने का सवाल नहीं। समाज के नियम सत्य हैं, उन्हें तोड़ना गुनाह है।"[3]

अलीमुन को बीमारी के बावजूद घर, परिवार, बच्चों की देखभाल के लिए मुँह अँधेरे उठकर काम करना पड़ता है। वह घरेलू काम के साथ–साथ आर्थिक गतिविधियों में भी भाग लेती है किंतु काम के विषय में निर्णय लेने की भागीदारी अत्यंत सीमित है– "अलीमुन भोर में ही जाग जाती है। वजू करती है। फजिर की नमाज पढ़ती है और इकबलवा को जगाकर रेशम लेकर बैठ जाती है।

अलीमुन रेशम के धागे सुलझा रही है।
इकबाल उसमें मदद कर रहा है।
मतीन अभी सोया है।"[4]

अलीमुन की स्थिति यह दर्शाती है कि श्रमिक स्त्री के लिए श्रम कोई विकल्प नहीं, बल्कि जीवन की अनिवार्यता है। बीमारी, शारीरिक दुर्बलता और मानसिक तनाव के बावजूद वह परिवार के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए निरंतर कार्य करती रहती है। यह चित्रण स्त्री के त्याग के साथ–साथ सामाजिक असमानता की ओर भी संकेत करता है।

मुस्लिम समाज में विशेषकर मुस्लिम स्त्रियों की दुर्दशा का कारण तलाक जैसी कुप्रथा है। तलाक विवाह को समाप्त करने की एक वैधानिक और धार्मिक प्रक्रिया है। ''तलाक का कॉन्सेप्ट जहाँ एक तरफ इस्लाम को दुनिया के अन्य तमाम धर्मों की तुलना में ज्यादा प्रैक्टिकल, ज्यादा मानवीय बनाता है,वहीं कहीं, कभी, किसी भी वक्त शौहर द्वारा तीन लफ्ज़ की अदायगी पर निकाह का खत्म हो जाना उसे बीवी पर निरंकुश शासक भी बनाता है।"[5] मुस्लिम स्त्रियों की इस दुर्दशा का यथार्थ चित्रण उपन्यास में लतीफ और कमरून के तलाक के संदर्भ में दिखाई देता है। लतीफ शराब के नशे में कमरून को तलाक देता है–

''तलाक तो बिरादरी में आम बात हो गई है। औरत जात की आखिर हैसियत ही क्या है? जब चाहो चूतड़ पर लात मारकर निकल दो! औरत का और इस्तेमाल ही क्या है? कतान फेरे, हांड़ी–चूली करे,साथ में सोये, बच्चे जने और पांव दबाए। इनमें से अगर किसी भी काम में हीला–हवाली करे तो कानून इस्लाम का पालन करो और बोल दो कि मैं तुम्हें तलाक देता हूँ। तलाक! तलाक! तलाक!"[6]

यद्यपि कमरून एक बेबस और लाचार स्त्री नजर आती है, किंतु अपनी अस्मिता को लेकर वह सजग है। एक चेतनशील स्त्री के रूप में बिना हलाला के लतीफ के साथ वापस आकर रहने लगती है। अब्दुल

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 08, August 2026 DOI: 10.82471/ds2wz-gnj04

बिस्मिल्लाह इस प्रसंग के माध्यम से यह दिखाते हैं कि स्त्री केवल परंपराओं का पालन करने वाली निष्क्रिय सत्ता नहीं है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर वह अपने जीवन के संबंध में निर्णय लेने का साहस भी रखती है। कमरून का चरित्र स्त्री–अस्मिता और आत्मनिर्णय की चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। धार्मिक दृष्टि से यह एक विद्रोह और क्रांतिकारी कदम है, किंतु कमरून के मन में धार्मिक पाप का भय व्याप्त है–

''अपने ही घर में वह बंदिनी की तरह रहने लगी।किस मुँह से बाहर निकलती?दुनिया में क्या ऐसा भी कहीं हुआ है कि तलाकशुदा औरत बग़ैर 'हलाला' के फिर अपने शौहर के साथ आकर रहने लगे? मज़हब के साथ इतना बड़ा खिलवाड़! इतना बड़ा गुनाह!"[7]

यह प्रसंग कमरून के मानसिक द्वंद्व, धार्मिक दबाव और आत्मसम्मान के बीच चल रहे संघर्ष को अभिव्यक्त करता है।

भारतीय समाज तमाम तरह की रूढ़िवादिता और अंधविश्वास से जकड़ा हुआ है। मुस्लिम समाज की स्त्रियाँ भी अशिक्षा, गरीबी आदि के कारण तमाम अर्थहीन मान्यताओं, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता से ग्रस्त हैं, जो उनकी उन्नति में बाधक हैं। उपन्यास में अब्दुल बिस्मिल्लाह जी मुस्लिम स्त्रियों की रूढ़िवादिता और अंधविश्वास के यथार्थ चित्रण के माध्यम से उनके सामाजिक जीवन की दुर्दशा को व्यक्त करते हैं। उपन्यास की स्त्रियाँ जीवन की समस्याओं का वैज्ञानिक और तार्किक समाधान खोजने के बजाय जादू–टोना, ताबीज,चमत्कार आदि में उलझी रहती हैं और अंततः उनका जीवन बद से बदतर होता जाता है।

''बहादुर शहीद का मजार कचहरी के पास है। वहाँ हर जुमेरात को बनारस और आसपास के गाँवों की स्त्रियाँ पहुँचती हैं तथा अपने–अपने भूतों से खेलती हैं... अपनी माँ के निर्देश पर रेहाना जमीन पर बिछे हुए कपड़े पर हाथ जोड़कर जुड़े हुए हाथों के बीच जलती हुई अगरबत्ती थामकर, सवारी आने के इंतजार में बैठ गयी।''[8]

उपन्यास की स्त्रियों में शिक्षा और जागरूकता का अभाव है, इसलिए वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं हैं। वे भाग्यवादी हैं और सामाजिक व्यवस्था को ईश्वरीय विधान मानकर उसमें परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करतीं।" महिलाएँ कभी यह समझ नहीं पातीं कि धर्म औरत को कब्ज़े में रखने का एक उपकरण है....औरत को बचना है और आगे निकलना है तो उसे पुरुषसत्ता के साथ–साथ धर्म की सत्ता को भी नकारता ही होगा।"[9] मतीन बुनकरों की समस्याओं के समाधान के लिए सोसायटी बनाना चाहता है।वह घर–घर जाकर चंदा मांगता है।इस कोशिश में वह अपने परिवार को अपेक्षित समय नहीं दे पा रहा है, जिससे उसकी पत्नी अलीमुन उससे नाराज़ भी रहती है।

''वह (अलीमुन)सोचती है– ''हमेशा से जो होता आया है वही न होगा, कि अल्ला मियाँ का निजाम तूँ बदल दोगे? अरे जो गरीब है वह गरीब ही रहेगा, चाहे लाख कोशिश करो।अल्ला मियाँ ने जिसे अमीर बना दिया है वह अमीर ही रहेगा।लोन लेने से थोड़े गरीबी मिट जाएगी। अरे फकीरी और बादशाहत सब खुदा की देन है!''[10]

शिक्षा परिवर्तन का सबसे प्रभावशाली अस्त्र है। शिक्षा स्त्री को केवल साक्षर नहीं बनाती अपितु उन्हें उनके कर्तव्य, उत्तरदायित्व और अधिकार के प्रति जागरूक बनाने का कार्य भी करती है। उपन्यास में स्त्री

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 08, August 2026 DOI: 10.82471/ds2wz-gnj04

शिक्षा का प्रश्न सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ है। पितृसत्तात्मक मुस्लिम समाज में रूढ़िवादिता, गरीबी और धार्मिक अंधविश्वास आदि ऐसी मान्यताएँ हैं जो मुस्लिम स्त्री की अशिक्षा का मुख्य कारण हैं। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अप्रत्यक्ष रूप से स्त्री जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हेतु शिक्षा पर बल दिया है। इकबाल भी स्त्री शिक्षा की पुरजोर वकालत करता है–

''सोचिए,सारी दुनिया में जबकि लडकियाँ पढ़ –लिख कर क्या –से –क्या बन रहीं है,हमारे घरों की लड़कियाँ सिर्फ कुरान पढ़ –पढ़कर पर्दों में बैठी कतान फेर रहीं हैं।उन्हें टी.बी.हो जाती है और उनकी जिंदगी ज़हर हो जाती है।बात – बात में हमारे यहां तलाक हो जाता है।"[11]

हनीफवा की बिटिया बिबिया जबसे स्कूल जाने लगी है, उसके व्यवहार और सोच में परिवर्तन आ गया है। यह तथ्य इस बात को सिद्ध करता है कि शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक चेतना के विकास का आधार है। अब वह सूरज, चाँद और पृथ्वी की उत्पत्ति, अंग्रेजी राज के शासन व कबीर आदि कवियों का अध्ययन करने लगी है।

यद्यपि उपन्यास की अधिकांश स्त्रियाँ अशिक्षा,गरीबी तथा सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों के कारण देश–विदेश की गतिविधियों से अनजान हैं, पुरुष प्रधान सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्था में उनके निर्णय की भूमिका अत्यंत सीमित है; फिर भी शोषण के प्रति उनमें समझ दिखाई पड़ती है। वह समझती हैं कि सरकारी योजनाओं के लाभ में बाधक तत्व क्या हैं और राजनेताओं के दोहरे चरित्र का भान उन्हें भली–भाँति है। सरकारी योजनाओं, नेताओं के व्यवहार तथा प्रशासनिक विसंगतियों के प्रति उनकी टिप्पणियाँ उनके अनुभवजन्य ज्ञान को व्यक्त करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जीवनानुभव भी चेतना का आधार बनता है इसके लिए कोई औपचारिक शिक्षा अनिवार्य नहीं है। उपन्यास में उनके आर्थिक–राजनीतिक स्थिति और अधिकार बोध के संकेत प्राप्त होते हैं। कमरून के वक्तव्य में वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था पर टिप्पणी मिलती है–

''अरे बस–बस चुप रहौ। कुछ उनके बाप लड़े रहेन कुछ ऊ लड़िएं। अउर इ सरकार? इ सरकारै त सब करावेती। उहै कायदा बनावेती अउर उहै इन्हें रास्ता बतावेती कि अब अइसे लूटो।"[12]

निष्कर्ष – अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि उपन्यास की स्त्रियाँ बहुआयामी शोषण का सामना करती हैं। वे एक ओर निर्धनता, बेरोज़गारी, बीमारी और आर्थिक विषमताओं से संघर्ष करती हैं, तो दूसरी ओर पितृसत्तात्मक व्यवस्था, पर्दा–प्रथा, अशिक्षा, धार्मिक रूढ़ियों तथा तलाक जैसी सामाजिक समस्याओं का भी सामना करती हैं। इन परिस्थितियों के कारण उनका जीवन निरंतर संघर्षमय बना रहता है। अलीमुन,कमरुन तथा अन्य स्त्री पात्रों के अपने चेतनशील होने का प्रमाण विभिन्न सामाजिक –धार्मिक प्रथाओं की विरुद्ध लिए गये निर्णयों से प्राप्त होता है। उनके भीतर परिवर्तन की आकांक्षा, शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टि तथा सामाजिक अन्याय के प्रति असहमति का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

अंततः कहा जा सकता है कि झीनी–झीनी बीनी चदरिया स्त्री जीवन के यथार्थ का अत्यंत प्रभावशाली आख्यान है, जिसमें बुनकर समाज की स्त्रियों के संघर्ष, श्रम, आत्मसम्मान, अस्मिता और सामाजिक चेतना का संवेदनशील एवं यथार्थपरक चित्रण किया गया है। बुनकर स्त्री का श्रम, संघर्ष और आत्मचेतना

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 08, August 2026 DOI: 10.82471/ds2wz-gnj04

स्त्री–अस्तित्व की पुनर्व्याख्या की माँग करते हैं, और झीनी झीनी बीनी चदरिया इसके लिए एक सशक्त साहित्यिक आधार प्रस्तुत करता है।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. स्त्री संघर्ष का इतिहासः 1800–1990,राधा कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2022, पृष्ठ–219
2. झीनी–झीनी बीनी चदरिया, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2021, पृष्ठ–09
3. वही, पृष्ठ–09
4. वही, पृष्ठ–44
5. कथादेश, मासिक, मार्च 2026, अंकः 01, पृष्ठ–136
6. झीनी–झीनी बीनी चदरिया, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2021, पृष्ठ–49
7. पृष्ठ–196
8. वही, पृष्ठ–63
9. कथादेश, मासिक, मार्च 2026, अंकः 01, पृष्ठ–22
10. झीनी–झीनी बीनी चदरिया,अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2021, पृष्ठ–38
11. वही, पृष्ठ–184
12. वही, पृष्ठ–187